वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत
एम.ए. हिंदी
PART-2

(2018-2019, 2019-2020 एवम् 2020-2021 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र-6 भाषा –विज्ञान एवम् हिंदी भाषा Core Course-06 (Total Marks :100)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

इकाई-1. भाषा और भाषा -विज्ञान -भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार, भाषा-संरचना और भाषिक -प्रकार्य. भाषा- विज्ञान-स्वरूप एवम् व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।
स्वनप्रक्रिया - स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिम विश्लेषण।

इकाई-2. व्याकरण- रूप-प्रकिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद-मुक्त-आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य, वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य-विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन-संरचना और बाह्य-संरचना।
अर्थविज्ञान -अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ-परिवर्तन, साहित्य और भाषा -विज्ञान -साहित्य के अध्ययन में भाषा-विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

इकाई-3. हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :
प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ - वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ- पालि, प्राकृत-शौरसेनी, अर्ध मागधी, मागधी अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।

इकाई-4. हिंदी की उपभाषाएँ और देवनागरी लिपि :
हिंदी का भौगोलिक विस्तार-हिंदी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाडी और उनकी बोलियाँ, खडीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।
देवनागरी लिपि-विशेषताएँ और मानकीकरण।

इकाई-5. हिंदी का भाषिक स्वरूप :
हिंदी की स्वनिम व्यवस्था, खंड्य, खंड्येतर. हिंदी शब्द रचना- उपसर्ग, प्रत्यय, समास।
रूप-रचना- लिंग, वचन और कारक- व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया-रूप. हिंदी वाक्य-रचना- पदक्रम और अन्विति।
हिंदी के विविध रूप-संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, माध्यम-भाषा, संचार-भाषा के रूप में हिंदी, हिंदी की सांविधानिक स्थिति।
हिंदी में कंप्यूटर सुविधाएँ- आंकडा-संसाधन और शब्द-संसाधन, वर्तनी-शोधक, मशीनी अनुवाद, हिंदी भाषा-शिक्षण।

अंक-विभाजन – सभी इकाईयों से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100 अंक)

सन्दर्भ पुस्तकें :

1. भाषा-विज्ञान-डॉ.भोलानाथ तिवारी (किताब महल, इलाहाबाद)
2. भाषा-विज्ञान की भूमिका-देवेन्द्रनाथ शर्मा (राधाकृष्ण प्रकाशन)

3. भाषा-विज्ञान-श्यामसुंदर दास (अनु प्रकाशन, जयपुर)
4. सामान्य भाषा-विज्ञान-डॉ.बाबूराम सक्सेना (हिंदी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग)
5. भाषा-विज्ञान एवम् भाषा-शास्त्र-डॉ.कपिलदेव द्विवेदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
6. भाषा-विज्ञान-सैद्धांतिक चितन- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
7. समसामयिक भाषा- विज्ञान-डॉ.कविता रस्तोगी (सुलभ प्रकाशन, लखनऊ)
8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप विकास-डॉ.देवेन्द्रप्रसाद सिंह (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. भाषा-विज्ञान-डॉ.अशोक शाह
10. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास-डॉ.उदयनारायण तिवारी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
11. हिंदी भाषा का इतिहास-डॉ.भोलानाथ तिवारी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
12. हिंदी भाषा और नागरी लिपि-डॉ.भोलानाथ तिवारी
13. भारतीय आर्यभाषा और हिंदी-सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
14. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग-विजयकुमार मल्होत्रा
15. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप-अंबा प्रसाद सुमन
16. राजभाषा हिंदी-डॉ.कैलाशचंद्र भाटिया (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
17. राजभाषा का स्वरूप-कैलाशचंद्र भाटिया (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
18. आर्य और द्रविड भाषा-परिवारों का संबंध-डॉ.रामविलास शर्मा (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
19. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप-अंबा प्रसाद सुमन
20. पालि भाषा और साहित्य-इंद्रचंद्र शास्त्री

==========

प्रश्नपत्र-7 हिंदी साहित्य का इतिहास Core Course-07 (Total Marks :100)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

इकाई- 1. इतिहास-दर्शन और साहित्येतिहास, हिंदी साहित्य के इतिहास की लेखन परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।
हिंदी साहित्य का इतिहास- काल-विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण।
हिंदी साहित्य-आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ साहित्य, रासो-काव्य, जैन-साहित्य।
हिंदी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्य-धाराएँ, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।

इकाई- 2. भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक-चेतना एवम् भक्ति-आंदोलन, विभिन्न काव्य-धाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य, प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्य-ग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवम् लोक-जीवन के तत्व।
राम और कृष्ण-काव्य, राम-कृष्ण-काव्येतर काव्य, भक्तितर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य, भक्तिकालीन गद्य-साहित्य।

इकाई- 3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल-सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण-ग्रंथों की परंपरा, रीति कालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त की प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ, रीतिकालीन गद्य साहित्य।

इकाई- 4. आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवम् सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् १८५७ ई. की राज-क्रांति और पुनर्जागरण।

भारतेन्दु-युग के प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
द्विवेदी-युग के प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ
हिंदी स्वच्छंदतावादी काव्य-चेतना का अग्रिम-विकास, छायावादी काव्य-प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
उत्तर छायावादी काव्य की विविध प्रवृतियाँ- प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत, समकालीन कविता के प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

इकाई- 5. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य की प्रमुख विधाओं- कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज एवम् हिंदी आलोचना का विकास।
दक्खिनी हिंदी साहित्य का संक्षिप्त परिचय,
हिंदीतर क्षेत्रों तथा देशांतर में हिंदी भाषा और साहित्य।

अंक-विभाजन – सभी इकाईयों से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (वाणी प्रकाशन,इलाहाबाद)
2. हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग-डॉ.नामवर सिंह
3. हिंदी साहित्य का अतीत-भाग-१-२-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
4. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ.बच्चन सिह
5. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)
6. हिंदी साहित्य का इतिहास डॉ.नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)
7. दक्खिनी हिंदी -भाषा और साहित्य-डॉ.वी.पी.मुहम्मद
8. मोरिशस में हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास-डॉ.श्यामधर तिवारी
9. दक्खिनी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.इकबाल अहमद (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
10. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.नामवर सिंह (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
11. हिंदी साहित्य-उद्भव और विकास-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
12. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.रामकुमार वर्मा (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
13. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
14. हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वाष्णेय (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र-8 भारतीय साहित्य Core Course-08 (Total Marks :100)

पाठ्य-पुस्तकें :

1. मछुआरे (चेम्मीन)-तकषी शिवशंकर पिल्लै (मलयालम उपन्यास) प्रकाशक –साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
2. चरित्रहीन – शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय (बंगाली उपन्यास) राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. राधा – इला आरब महेता (गुजराती उपन्यास) हर्ष प्रकाशन, अहमदाबाद
4. ययाति-वि.स.खांडेकर (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली) (मराठी उपन्यास)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

इकाई- 1. भारतीय साहित्य -
भारतीय साहित्य का स्वरूप, भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ,

भारतीयता का समाजशास्त्र।
भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब, हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।
तुलनात्मक साहित्यः सामान्य परिचय।

इकाई- 2. मछुआरे (चेम्मीन) – तकषी शिवशंकर पिल्लै

तकषी शिवसशंकर पिल्लै का व्यक्तित्व और कृतित्व,
'मछुआरे' के पात्र-परीक्कुट्टि, करुतम्मा, पलनि,चेम्पनकुंजु एवम् चक्कि का चरित्र- चित्रण,
'मछुआरे' में पिल्लै की यथार्थवादी विचारधारा, 'मछुआरे' में चित्रित समाज,
'मछुआरे' की कथन-शैली में मिथ और भाषा का प्रयोग।
'मछुआरे' में अभिव्यक्त मछुआरा जीवन।

इकाई 3. चरित्रहीन – शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय :

चट्टोपाध्याय का औपन्यासिक परिचय, 'चरित्रहीन' का मूल प्रतिपाद्य, 'चरित्रहीन' की पात्र-सृष्टि,
'चरित्रहीन' सामाजिक उपन्यास के रूप में, 'चरित्रहीन' में अभिव्यक्त नारी की स्थिति,
'चरित्रहीन' एक प्रेम-कथा 'चरित्रहीन' का भाषा शिल्प |

इकाई-4. राधा – इला आरब महेता :

'राधा: पौराणिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास ।

'राधा': जीवन संघर्ष की कथा, 'राधा' वात्सल्य प्रेम की करुण कथा,

'राधा' उपन्यास की पात्र-सृष्टि, 'राधा' में अभिव्यक्त मनःस्थिति का चित्रण,

' 'राधा का कथा-शिल्प, गुजराती उपन्यास साहित्य में इला आरब महेता का स्थान।

इकाई-5. ययाति- वि.स.खांडेकर :

'ययाति' की पात्र-सृष्टि- कच-देवयानी, यति, मंदार, अलका आदि। गौण पात्रों का चरित्र-चित्रण।

'ययाति' में ययाति-अलका के संबंध।

'ययाति' में कच-देवयानी का असफल प्रेम, 'ययाति' में लेखक के चिंतनशील मन की व्याकुलता।

'ययाति': का शिल्प-विधान।

अंक-विभाजन – सभी इकाईयों से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1.भारतीय साहित्य-डॉ.नगेन्द्र (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
2.भारतीय साहित्य की भूमिका-डॉ.रामविलास शर्मा (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
3.भारतीय साहित्यः स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ- के.सच्चिदानंद (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
4.भारतीय साहित्यः आशा और आस्था-डॉ.आरसु (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
5.गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधरी एवम् राधेश्याम शर्मा (गुजरात ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गांधीनगर)
6.भारतीय साहित्यः तुलनात्मक अध्ययन-सं.डॉ.ब्रजेश्वर वर्मा (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
7.भारतीय उपन्यास परंपरा और ग्राम-केन्द्री उपन्यास- भोलाभाई पटेल (पार्श्व प्रकाशन,अहमदाबाद)
8.भारतीय साहित्य- डॉ.पाण्डेय-डॉ.अवस्थी (आशीष प्रकाशन, कानपुर)
9.गुजराती नवलकथा मां पात्र-निरूपण-रमेश दवे
10.तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ-राजमल बोरा (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
11.तुलनात्मक अध्ययनः भारतीय भाषाएँ और साहित्य-राजमल बोरा (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
12.तुलनात्मक साहित्य-एन.ई.विश्वनाथ अय्यर (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
13.मराठी साहित्यः परिदृष्य-चंद्रकांत बांदिवडेकर (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
14.बंगला साहित्य का इतिहास, भारतीय साहित्य अकादमी, दिल्ली
15.हिंदी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन-डॉ.राम छबीला त्रिपाठी
(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)

प्रश्नपत्र-9 आधुनिक गद्य साहित्य Core Course-09 (Total Marks :100)

पाठ्य-पुस्तकें : 1. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश (राजपाल एन्ड संस , दिल्ली)
2. मैला आँचल - फणीश्वरनाथ 'रेणु' (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
3. झूलानट-मैत्रेयी पुष्पा (प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
4. निबंधमणि- संपा.डॉ.कृष्णचंद्र वर्मा (प्रकाशक-नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

इकाई- 1. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश :
'आषाढ़ का एक दिन' का वस्तु विन्यास।
'आषाढ़ का एक दिन' में इतिहास और कल्पना, रंगमंचीयता और 'आषाढ़ का एक दिन',
'आषाढ़ का एक दिन' की पात्र सृष्टि, 'आषाढ़ का एक दिन' में भाषा-शिल्प |

इकाई- 2. मैला आँचल - फणीश्वरनाथ 'रेणु'
आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ 'रेणु', 'मैला आँचल' में आँचलिकता,
'मैला आँचल' की कथा योजना, 'मैला आँचल' की पात्र सृष्टि, 'मैला आँचल' में लोक संस्कृति |

इकाई-3. झूलानट-मैत्रेयी पुष्पा
'झूलानट': कथ्य-योजना, 'झूलानट' में नारी-चेतना।
'झूलानट': के पात्र- शीलो, बालकिशन और अम्मा, नारी-विमर्श और 'झूलानट'।
'झूलानट': कथा-शिल्प और भाषा।

इकाई-4. निबंधमणि- संपा.डॉ.कृष्णचंद्र वर्मा

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल के
  1.कविता क्या है और 2.काव्य में लोकमंगल की साधना- निबंधों का प्रतिपाद्य, केन्द्रित प्रश्न और भाषा-शैली गत अध्ययन।
  आचार्य रामचंद्र शुक्लः एक श्रेष्ठ निबंधकार।
- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के
  1.साहित्य का मर्म और 2. साहित्य की नई मान्यताएँ- निबंधों का प्रतिपाद्य, केन्द्रित प्रश्न और भाषा-शैली गत अध्ययन।
  हिंदी निबंध साहित्य में आचार्य ह.प्र.द्विवेदी का स्थान
- डॉ.नगेन्द्र के 1.सौंदर्यानुभूति का स्वरूप और 2. काव्य-बिंबः स्वरूप और प्रकार – निबंधों का अध्ययन।

इकाई- 5 . प्रसाद युगीन नाट्य-साहित्य, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक – नया नाटक |
आँचलिक उपन्यास उद्भव और विकास तथा विशेषताएँ |
हिंदी निबंधः उद्भव और विकास।

अंक-विभाजन – सभी इकाईयों से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी के आँचलिक उपन्यास-संपा.डॉ.रामदरश मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
2. हिंदी उपन्यास-एक अंतर्यात्रा-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
3. समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष-डॉ.अर्जुन चौहाण

4. हिन्दी उपन्यास का विकास-मधुरेश
5. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार-डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
6. मैत्रेयी पुष्पा और उनका झूलानट- डॉ.उत्तम पटेल (शांति प्रकाशन, रोहतक)
7. हिन्दी उपन्यास : समकालीन परिदृश्य - सं. डा. महीप सिंह
8. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सं. डा. नरेन्द्र मोहन
9. साठोत्तर हिन्दी साहित्य का परिप्रेक्ष्य -सं. हिन्दी-विभाग, पुणे विधापीठ, पुणे।
10. रामचंद्र शुक्ल - डा. सत्यदेव मिश्र
11. दूसरी परंपरा की खोज-डॉ. नामवर सिंह
12. आचार्य रामचंद्र शुक्ल - रामचंद्र तिवारी
13. हिंदी नाटक आज तक डॉ. वीणा गौतम
14. हिंदी नाटक-डॉ.बच्चनसिंह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
15. हिंदी नाटकः उद्भव और विकास-डॉ.दशरथ ओझा (राजपाल एण्ड संस, दिल्ली)

प्रश्नपत्र-10. लोक-साहित्य एवम् पत्रकारिता-प्रशिक्षण Core Course-10 (Total Marks :100)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र:

इकाई-1 . लोक-संस्कृति: अवधारणा, लोक-वार्ता और लोक-संस्कृति, लोक-संस्कृति और साहित्य।
लोक-साहित्य: अवधारणा, संस्कृत वाङगमय में लोकोन्मुखता।
वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक-साहित्य का अंतःसंबंध।
लोक-साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध।
भारत में लोक-साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
लोक-साहित्य की अध्ययन प्रक्रिया एवम् संकलन की समस्याएँ।

इकाई-2. लोक-साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरणः लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कथा, लोक-गाथा, लोक-नृत्य-नाट्य, लोक-संगीत।
लोक-गीतः संस्कार-गीत, व्रत-गीत, श्रम-गीत, ऋतु-गीत, जाति-गीत।
लोक-नाट्य: रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वाँग, यक्षगान, भवाई संपेडा, विदेसिया, माच, भाँड़, तमाशा, नौटंकी, जात्र, कथकली।
दक्षिणी गुजरात की किसी एक बोली के लोक-साहित्य का अध्ययन।

इकाई-3. विश्व पत्रकारिता का उदय, भारत में पत्रकारिता का प्रारंभ।
प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।
इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता-रेडियो, टी.वी., वीडियो, केबल, मल्टी मीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।

इकाई-4. समाचारपत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना, समाचार के विभिन्न स्रोत।
दृश्य-सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, गैफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवम् कार्य-पद्धति, पत्रकारिता से संबंधित लेखन-संपादकीय, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन (फॉलोअप) की प्रविधि।

इकाई-5 . अ. लोक-कथाः व्रत-कथा, परी-कथा, नाग-कथा, बोध-कथा, कथानक-रूढ़ियाँ अथवा अभिप्राय।
लोक-गाथाः ढोला-मारू, गोपीचंद भरथरी, नल-दमयंती, लैला-मंजनूँ, हीर-राँझा, सोहनी- महीवाल, लोरिक-चंदा, आल्हा-हरदौल।
लोक-भाषाः लोक-सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।

ब. प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रण-कला, प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ सज्जा।
पत्रकारिता का प्रबंधन-प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था।

मुक्त प्रेस की अवधारणा, लोक-संपर्क तथा विज्ञापन, प्रसार-भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी ।

अंक-विभाजन –इकाई 1, 2, 3 और 4 से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 4 = 80 अंक)

इकाई-5 अ और ब से एक-एक टिप्पणी का प्रश्न (10 x 2 = 20 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. भारतीय लोक-साहित्य- श्याम परमार (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. लोक-साहित्य-डॉ.इन्दु यादव (साहित्य रत्नालय, कानपुर)
3. कुंकणा बोली के लोक गीत-डॉ.उत्तम पटेल (शांति प्रकाशन, अहमदाबाद)
4. भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन-डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय
5. लोकसाहित्य की भूमिका- डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय (साहित्य भवन, इलाहाबाद)
6. लोक-जीवन और साहित्य-डॉ.रामविलास शर्मा (वनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
7. लोक-साहित्य और संस्कृति-दिनेश्वर प्रसाद (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
8. लोक-साहित्यः सिद्धांत और प्रयोग-डॉ.श्रीराम शर्मा
9. लोकः परंपरा, पहचान और प्रवाह (राधाकृष्ण प्रकाशन)
10. राम लीला: परंपरा और शैलियाँ (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
11. हिंदी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास-अर्जुन तिवारी (वाणी प्रकाशन)
12. हिंदी पत्रकारिताः स्वरूप और संदर्भ-विनोद गोदरे (वाणी प्रकाशन)
13. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-पी.के.आर्य (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)
14. फीचर लेखनः स्वरूप और शिल्प- डॉ.मनोहर प्रभाकर(राधाकृष्ण प्रकाशन)
15. समाचार संपादन-कमल दीक्षित, महेश दर्पण (राधाकृष्ण प्रकाशन)
16. पत्रकारिताः विविध विधाएँ-डॉ.राजकुमारी रानी (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
17. पत्रकारिताः मिशन से मीडिया तक-अखिलेश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
18. भारतीय इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-देवव्रत सिंह (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)
19. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन
20. संपादन कला एवम् प्रूफ पठन-डॉ.हरिमोहन
21. आधुनिक विज्ञापन और जन संपर्क - डॉ.तारेश भाटिया
22. पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ-डॉ.भोलानाथ तिवारी

==========